प्राचीन भारतीय इतिहास के
② साहित्यिक स्रोत !— ①

साहित्यिक स्रोतो के अन्तर्गत प्राचीन धार्मिक साहित्य अथवा हिन्दु धार्मिक साहित्य, बौद्ध धार्मिक साहित्य जैन धार्मिक साहित्य, ऐतिहासिक ग्रन्थ नाटक, राजनीतिक एवं व्याकरण संबंधी ग्रन्थ आते है। ये सभी साहित्य भारतीय इतिहास के विषय में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करते है।

हिन्दू धार्मिक साहित्य :- इस साहित्य के अन्तर्गत वेद, उपवेद, वेदांग, ब्राह्मण ग्रन्थ, अरण्यक, रामायण, महाभारत तथा पुराण आदि आते है ये सब हिन्दु ~~धार्~~ धार्मिक साहित्य प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी ~~प्राप्त~~ प्रदान करते है

(i) वेद → वेद की संख्या :- ४ - ऋग्वेद, वेदो मे ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, सबसे प्राचीन है इनमे 10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10580 ~~श्लोक~~ ऋचाएँ है इस ग्रन्थ से प्राचीन आर्यो के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन के विषय मे विशद जानकारी प्राप्त होती है

(ii) यजुर्वेद इसमे 40 अध्याय तथा लगभग 2000 मंत्र है इस ग्रन्थ से तत्कालिन भारत के सामाजिक एवं धार्मिक पक्ष की जानकारी प्राप्त होती है

(iii) सामवेद → सामवेद मे 1549 अथवा 1810 श्लोक है इस श्लोक को यज्ञ के अवसर पर गाया जाता था। यह ग्रन्थ तत्कालिन भारत की गायन विद्या ~~पक्ष~~ का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है

Scanned with CamScanner

अथर्ववेद → इस ग्रन्थ में 20 मण्डल 731 ऋचाएँ 5839 मंत्र है इससे उत्तरवैदिक कालीन भारत की पारिवारिक सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है इसके अधिकांश मंत्र आयुर्वेद से संबंधित है जिसमें अनेक रोगो से बचने के लिए औषधियों, साँप के विष को दूर करने तथा जादू टोने से संबंधित मंत्रों का उल्लेख है।

* उपवेद → वेद का एक उपवेद भी है जिसमें चिकित्सा सम्बन्धी विशेष तथ्यों का उल्लेख भी मिलता है यह ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है धनुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद है जिसमें शस्त्र प्रयोग का उल्लेख मिलता है गन्धर्ववेद सामवेद का उपवेद है - जिसमें संगीत, गायन नृत्य आदि विद्या का उल्लेख मिलता है शिल्पवेद अथर्ववेद का उपवेद है इसमें वास्तुकला के साथ-साथ अन्य कलाओं का वर्णन मिलता है।

* वेदांग वैदिक काल के अन्त में वेदों का अर्थ समझने के लिए वेदांग की रचना हुई ये वेदों का ही अंग है जिसकी संख्या-06 है। शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। वैदिक मंत्रों का शुद्ध उच्चारण करने के लिए शिक्षा शास्त्र का निर्माण किया गया। विधि और नियमों का प्रतिपादन करने के लिए कल्पसूत्र का निर्माण हुआ। कल्प सूत्र के तीन भाग है - श्रौतसूत्र, गृहसूत्र और धर्मसूत्र। पाणिनिकृत अष्टाध्यायी व्याकरण ग्रंथों में सबसे महत्वपूर्ण है इसी प्रकार ~~यास्क~~ द्वारा निरुक्त में वैदिक शब्दों की उत्पत्ति को बतलाई गई है छन्दशास्त्र में छन्द से सम्बन्धित बातों का उल्लेख है ज्योतिशास्त्र में

ज्योतिष से सम्बन्धित बातें कहीं गई हैं
(B)
(9)

③ ④

~~इन पुराणों से हमें~~
इन पुराणों के विषय 5 है (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मनवन्तर और वंशानुचरित)। इन पुराणों से हमें मौर्य वंश शिशुनाग वंश, तथा अन्य महत्वपूर्ण राजवंशों की जानकारी मिलती है वास्तव में इतिहास जानने के लिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है ~~डॉ० स्मिथ के अनुसार "यदि पुराणों को ध्यान से पढ़ा~~ ~~जाये तो~~ गंधर्व, शक, यवन, तुषार हूण इत्यादि बर्बर जातियों का विवरण मिलता है इतना ही नहीं भारत के प्राचीन ऐतिहासिक कथाओं तथा घटनाओं का सर्वश्रेष्ठ एवं क्रमबद्ध विवरण मिलता है डॉ० स्मिथ के अनुसार - "यदि पुराणों को ध्यान से पढ़ा जाय तो बहुत ही अच्छा, उपयोगी तथा मूल्यवान ऐतिहासिक साधन प्राप्त हो सकता है"

Scanned with CamScanner